

कौन सी पठायो तोहि काह तेरो नाम है।

(1)

(2) कौन के सुत।

(3) कौन बालि न जानिहीं।

(4) कहाँ है वह बीर।

(5) किमि गयो।

(6) अब लंक नाथक कौन।

(7) मोहि जीवित होहि कैसे।

(8) मोहि कौन जो मारिहीं।

(9) कौन कार्य से आपे हो अब बेगी मोहि बतावहुँ।

(10) ऐ रे ब-दर मैं तेरा समझा नहीं कलाम, पाद मुझे आता नहीं कौन बालि व राम।

(11) अंगद क्या तू ही अंगद है, क्या तू ही बालि का बालक है।
क्या तू ही बांस की अग्नि है, क्या तू ही पिता का धालक है।
यदि तेरा गर्व नष्ट होता तो होती आज अकाज नहीं।
तपस्वी का दूत कहाने में आती है तुझको लाज नहीं।
इससे तो गह अच्छा होता, तू मुझसे प्रथम मिला होता।
देख प्रताप भानु मेरा तेरा यश कमल खिला होता।
तू मुझसे अब भी मिल जाये, तो तेरी सुगति हो जाये।
इस बड़े राज लंका का तू कल ही सेनापति बन जाये।

(12) अच्छा यदि सन्धि चाहते हो, स्वीकार करो इन शर्तों पर।
पहले दे भेज विभिषण को, सर धरे हमारे चरणों पर॥
फिर तोड़े सैतु समुद्र को, तुझको दें नजर सलामी में।
फिर दाँतों में तिनका दबाय सरणागत हो इन ~~बड़े~~ बाणों की।
कर जोड़े मेरे रामलखन और भिक्षा मांगे प्राणों की।

(13) स्वामी तेरा नाकाबिल है जो नारि का दुख सहता है।
उसके दुख से उसका भई, हर वक्त दुखी ही रहता है॥

90 90
बानर सब भूली गाल है, व तुम सुखी नदी के पेड़ ।
जिस पोढ़ा पर है गर्व तुम्हें, वह जामवत भी हुआ उधेड़ ।
नल-नील शिल्प का कार्य करे, सीखे न युद्ध में जाकर वह
भाई तो हमारा गीदड़ है, बघा जाने खड्ग उठाने वह ॥
हैं हैं तो केवल वह ही है, जो आकर लंका जला गया ।
अफसोस तोड़कर तीली को, पिजड़े से पंखी निकल गया ।

(13) अंगद तुझको पह खबर नहीं, मैं आफत पर का कला हूँ ।
जिससे दिगपाल दहलते हैं, वह मस्त और मतवाला हूँ ।
मेरी इन बड़ी भुजाओं ने, कैलाश पहाड़ उठाया है ।
दानव, यम, इंद्र, वरुण कुबेर इन बाणों से धरया है ॥
सूरज भी मेरी भुकुटी से पूरब से पश्चिम जाता है ।
पवन देव भी मेरी मजी से, सरदाता और गरमाता है ॥
मुझसा पण्डित मुझसा मोढ़ा संसार में और न पूजा है ।
अपने मस्तक को काट², शंकर को मैंने पूजा है ॥

(14) तू अपनी पदवी पर रह, अधिकार न सार बदले का ।
बकवादी तेरा काम नहीं, मुँहजोरी कर दिखलाने का ॥
वे अपने आप निपट लेंगे, जिनमें क्षिण रंही लड़ाई है ।
तू व्यर्थ मुँहे लग जाता है, क्यों नाहक सार बढाई है ॥

(15) जो काम और अमातुर है, वे सुलह के पापड़ बेचते हैं ।
सच्चे दिलेर ~~हैं~~ सच्चे मर्दा, सार देकर सार से खेलते हैं ।
मैं वह जहरी विष वाला हूँ, जिसके काटे की दवा नहीं ।
तू दूत है रस से सभा में मैं, दे सकता तुझको सजा नहीं ॥
मैंने निज मन में ठान लिया, इन बातों का बदला लूंगा ।
जब सभा से तू बाहर होगा, तब तुझको भरवा डालूंगा ॥

(16) जिसके बल पर तूने मुझको, ये तीखी बात कही ।
उन दोनों तपसी बच्चों में, बल, बुद्धि, ज्ञान व मान नहीं ॥

गुणहीन बाप ने जब जाना तब देश निकाला दिया उसे।
 रोता है नारि बिरह में वह, इस दुख ने मुर्दा किया उसे॥
 मेरे रजनीचर महाबली जो बिकटानन कहलाते हैं।
 ऐसे बच्चों को तो एक ग्रास किया ही करते हैं।

17) पकड़ो इस ठीठ बानरे को, जंजीर बाँधने की लाड़ों।
 लोहे की छड़ें गरम करके, इसके शरीर पर लगवाओ॥
 मुखिया पहलवान इधर आओ, सब मेरा हुकुम बजा लाओ।
 जाओ रामादल में जाओ, बानरो आलुओं को रवा जाओ।
 यह काम अगर कुछ मुश्किल है तो मेघनाथ तुम भी जाओ॥

18) बानर सब मूली गाजर हैं मेरे रजनीचर हाँथी हैं।
 क्यों अजानकी सी बात करे जानकी जानकी साथी हैं।

19) जा चला जा भाग जा यहाँ से तू, ~~बख्श~~ अन्धमा बुरा फल पायेगा
 अब मैं तलवार चलाऊँगा जब तू जुवा चलायेगा।
 जा उन तपसी बच्चों से कहदे की तैया है हमलड़े के
 वे नीची नाको धर जायें, क्यों आये हैं मरने के लिये॥

(रामसे पुछ के समय) शमलक्ष्मण व रावण समाय

1- सुनर रे राम मेरी बहू पे तू घर के दूपा

आगे तेरा काल आज मूल्य सीखे जायेगी

स्वर्णरत्न रख मरि जो गिरि उदर करि

रुन मुन करके रुधिर लेके तेरे तेरी चोरेगी

हाहाकार पसड़ दिशाओ मे मन्त्राप देहे

लंका पूर भीतर बघाई आज बोलेंगी

सम तेरी सीता फिर च्युनेगी समीर होकर

बाद में मेरी पहरानी होके जायेगी।

2- (लक्ष्मण से पुछ के समय)

लक्ष्मण मेरे इन चरणों पर सारा सुख उल झुका है।

बन्दी होकर मेरे घर में पम और काल तक सजता है।

तु मुझे जाना है इतना मैं केवल लंका-व्यभिचर हूँ
 पर तुमको है पह-खर नहीं मैं ही इस जग का इभिचर हूँ।
 3- (विभीषण को दरबार खकर)

मेरे भोले का जानकार केवल इस जगह विभीषण है
 इसलिए मृत्यु का भी मेरी हो सकना पहली कारणा है।
 पहले इसको ही मार दो जीवन सँभवि हो जायेगा।
 फिर तपस्वी हो किंवा गिनती में है बहमा भी मार न पायेगा।
 4- मारि मारि वाणन से प्रहरी हो राजनिहि। ऐसी अनिहि पर भी नीहि। सीरगलाकुमें।
 मेरे तेरे भाता वाण जा रहे है हमारे प्राण फट रही है घाही दुख कैसे बि सताऊ में।
 अब तो पही आस रही शम आपे पास मेरे केले कुद्वैत जिससे चित्त शांति हो
 जाय उनसे कहो कि मुझसे अब छोड़े नही पहले के के परस पीदे नीहि। सीरगलाकुमें।

5- ^{बादी} लंका देखा उनयन भारी को जग किसी से कुद्व सीखना होला है तो उसका
 पैर पकड़कर सीखा जाये है इसके सर पर चढ़कर नहीं तुममें व तुम्हारे भारी
 में पही अन्तर है।

6- ^(सुम से) अब तो है इतनी शक्ति नहीं जो नीहि शारत का वर्णन हो।
 हाँ इतनी बोले कहनी है जिनसे कुद्व आशा पालन हो।
 हाँ बोले मुझको कहनी है शुभ कार्य सीखु कसा अन्धवा।
 दुवकर्म हले जिरना हले उसका सोई व हलना अन्धवा।
 मैं सोन्चा था लंका में दीरास-युल आऊगा
 पह भी सोन्चा था स्वर्ग पडुचने हिल सीढ़ी लगवाऊगा।
 पर आज तलक करते करते मुझसे शुभ कर्म बहल गया वह,
 मन में ही लालसा बह रह गई अपूर्ण पोजना वह
 पर नारी-चोरी करने का कर्म कर जला सर्पसी घृतासे
 धरणा म इसी का बह पापा-चल दिफा काज इस दुनिया से।

7- (सम आज मुझे सुझाई दे रँहा है कि)-
 इस का वरदान और पास था वसुधैव कुटुम्बकम् रक्षी वीर भुजा सदा पूरण उमागकी
 लंका ऐसी कोहि रही सम्पत्ति अतुल रही वार सदा मरी रही गर्व अभिमान
 एकलाव पुत्र और सेवा लाख चाह रहे वार सदा भरी रही गर्व अभिमान की
 मैं तो किफ था सिर्फ एक जानकी का दूत पर मेरा सर्वस्व हर लिए आज जानकी

8- अच्छा अब नीहि समाप्त हुई कहनी अब शक हद की है
 तुम समझ रहे हो न मुझे
 सम समझ रहे हो न मुझे पर नही जान मेरी ही है

रावण सीता संवाद

93

15

- 1- महालक्ष्मी प्रणाम, प्रणाम, प्रणाम।
कोई सर झुकाएं कोई सर भी नहीं उठाये।
- 2- सीता एक जमाना बीता मैंने सारा जग जीता तेरे प्रेम में
न जीता लेकिन दुःख सदेह जोरी जाएगी और रावण की
पटशनी कहलाएगी।
- 3- सीता जलते हुए दीपक पर पतंग आता हूँ।
- 4- मुझे जलाकर तुझे कब आराम आएगा
- 5- सीता रावण जैसे घोड़ा से तुम्हें न धीरे हैं प्रेम किया उस
शम से जोगी या फकीर हैं।
- 6- मांभ लो मोहलत एक माह की जो खेर चाहती अपने जानकी
- 7- सुन सीता सुन्दर मुखी, चपल मन चितचोर
एक बार अनुराग से देख लो मेरी ओर
भ्रष्टाचार में मेरी नैया है तू पार लगा दे ए सीते
जिस राह में सच्ची राहत है वह राह दिखा दे ए सीते।
कर कृपा डुब्बि मेरे ऊपर किन्तु मुसका दे ए सीते
बस यही आरजू है मेरी दीवार दीखा दे ए सीते।
- 8- बस खबरदार हो ये सीते चलती हैं जुवा बहुत तेरी।
कानो से तूने सुना नहीं ताकत मेरी पुरित मेरी
बस जब्य ही मान दुभुम मेरा वनी सर तेरा काँटूंगा
यह गुस्ताखी तेजी देगे दम भर में अभी भूला दूँगा
- 9- तूम दिखी तरह से समझाकर सीधे रास्ते ले आवो
वन जाए रानी यह मेरी इस तरह से इसको समझावो
है एक माह की मुहलत यदि इस पर भी इनकार किया
तो सिर छाड़ से हो जुवा समझ यह मैंने कौल करार किया।

विभीषण से

१- कुरते हो बड़ा दुश्मन की और भई माना है ।
बनी सिर काट अभीलिता यह ख्याल मुझे दिल आता है
है कुल कुलंक अब जान लिया तू मुझे सीख सिखाता है
हमको डर पोक बनाता है दुश्मन का गौरव गाता है ।
भेदी नालायक तुमसा होगा भई से बगावत करता है
श्वाता है नामक हमारा तू दुश्मन की सखावत करता है

२- वरुण - २ स्वामेश विभीषण हो वेजा है सदा निरादर की
गर दूसरा कोई यो कहता मैं अभी काट देता सर को
दुश्मन को सुभाएं सर जाकर यह शवण की दस्तूर नहीं
भर जाऊ मगर लेकर कुलंक तू सिपा को यह मंजूर नहीं
तू मेरे नाम की इज्जत को ^{विष्णु दण्ड खिगाना} ~~मिही में मिलाना~~ चाहता है
इस राज वरुण की आज्ञा को मिही में मिलाना चाहता है ।
है कुल जोड़ी कुबुद्धि नीच तू दूर हो मेरी आरबों से
अगो ही सुन यह नीति शास्त्र जा मिल जा तपसी बट्यो से ।